विनोद कुमार शुक्ल

# हरी घास की छप्पर वाली झोपड़ी और बौना पहाड़! (IV)

बस्ती में जहाँ से जंगल शुरू होता वहाँ छोटा-सा माता का देवालय था। मन्दिर बहुत पुराना नहीं था। मूर्ति बहुत पुरानी थी। मन्दिर से सटा हुआ एक छोटा-सा सुन्दर सरोवर था। सरोवर मूर्ति के काल का लगता था। सरोवर के चारों ओर पानी तक पहुँचने के लिए पत्थर की सीढ़ियाँ थीं। गर्मियों में यहाँ शेर, हिरण, जंगली भैंस, नीलगाय आदि पानी पीने आते थे। सरोवर में बड़े-बड़े कछुए और मछलियाँ भी थीं। शेर जब पानी पीता तो उसकी नज़र मोटी-मोटी मछलियों पर भी होती कि झपट्टा मारकर मुँह में दबोच ले। भूखा शेर थककर जब ज़मीन पर लोटता होगा तब आकाश की ओर अपने चारों पैर उठाए उसकी दृष्टि आकाश पर उड़ते पक्षी पर ऐसे पड़ती होगी कि उड़कर पक्षी को दबोच ले। पंख वाले सिंह की कल्पना में शायद यह भी एक कारण हो। माता के देवालय के पास एक अखाड़ा था। वहाँ कुश्ती लड़ने का खेल होता। एक भारी गोल पत्थर भी था। उसको उठा लेने का भी खेल होता। भैरा इस पत्थर को उठा लेता था। भैरा पत्थर तो उठा लेता पर बाद में खुद उठ नहीं पाता था। उसको उठाना पड़ता। पत्थर उठाने का अभ्यास उसे बिच्छू ढूँढ़ने के कारण पड़ा। रास्ता चलते वह पत्थर उठा लेता कि इसके नीचे बिच्छू होगा। पर उसे बिच्छू कभी मिलता नहीं। और निराश होकर वह पत्थर को दूर फेंक देता।

बौने पहाड़ पर एक दिन बोलू ने एक गोल पत्थर को उठाया और चट्टान पर पटका तो पत्थर के दो टुकड़े हो गए थे। जैसे नारियल के बराबर-बराबर दो टुकड़े हो जाते हैं। बोलू ने देखा था कि पत्थर के दोनों टुकड़ों में नीले रंग के स्फटिक चमक रहे थे। ऐसे ही दो-एक पत्थरों को और तोड़कर देखा पर उसमें स्फटिक नहीं थे। स्फटिक वाले पत्थरों को उसने एक चट्टान के नीचे औंधा कर रख दिया जिससे स्फटिक छुप जाएँ। किसी को न दिखें। यह बात मित्रों को बताना वह भूल गया था।

मंगलवार का दिन था। कक्षा में आते ही गुरूजी ने कहा, "आज की पढ़ाई है कि आज स्कूल में कोई पढ़ाई नहीं होगी। और इस पढ़ाई का विषय है– छुट्टी का दिन। तुम लोगों को अच्छे से छुट्टी का दिन बिताना चाहिए। छुट्टी का दिन तुम लोगों ने कैसे बिताया यह मुझे कल बताना। छुट्टी के दिन की पढ़ाई रात तक चलेगी। जब तक तुम सो नहीं जाते। छुट्टी का दिन अकेले मनाना चाहते हो तो अकेले मनाना, या जिनके साथ मनाना हो तो उनके साथ मनाना। एक साथ जैसे कक्षा में पढ़ाई का दिन होता है वैसे ही एक-साथ भी बिता सकते हो। अपने घर में या किसी के घर में या घर से बाहर इस उपयोगी दिन का उपयोग करोगे। परन्तु घर सही समय पर पहुँच जाना।"

"गुरूजी आप हमारे साथ रहेंगे?" एक-साथ बहुत से बच्चों ने पूछा।

"मैं किसी के साथ नहीं रहूँगा। मैं स्कूल में रहकर सभी गुरूजी के साथ परीक्षा की तैयारी करूँगा। छुट्टी के दिन की भी परीक्षा होगी।"

"मैं सरोवर जाकर मछलियों को गिनूँगा।" बीनू ने कहा। पर पानी में तैरती मछलियों को गिनना कठिन काम था। "माता देवालय में हम लोग छुआछुआईल खेलेंगे।" तीन चार बच्चों ने कहा। इनमें कूना और बोलू भी शामिल थे। बोलू और कूना दोनों दो आलों में बैठे थे। कूना चिल्लाई थी, बोलू हाथ उठाकर शामिल था।

"बोलू तुमने कुछ कहा?" गुरूजी ने पूछा।

"मैं छुआछुआईल खेलूँगा।" बोलू भूल गया था कि वह आले में है। और यह कहकर आले से उतरकर हवा में चार कदम चल चुका है। बोलते ही वह दाहिने हाथ से खूँटी पकड़े लटक गया था और उसने हवा में चार कदम चलाए थे। बोलू ने हवा में कदम चलाए थे इस पर किसी का ध्यान नहीं गया था, गुरूजी का भी नहीं। कूना को याद था। जब बोलू के गिरने का डर होता था, वह पहले से बोलू को सावधान कर देती थी। आज वह बोलू की कक्षा में आ गई थी। वह कलम लाना भूल गई थी। होता यह था कि कूना की कलम पता नहीं कैसे बोलू के बस्ते में चली जाती थी और बोलू की कूना के बस्ते में। कूना और बोलू यह जानबूझकर नहीं करते थे। हो सकता है यह अदल-बदल कलम, पेंसिलें जानबूझकर करती हों। सभी कलम एक जैसी होती थीं। कलमें एक-दूसरे को पहचानती होंगी। बोलू, कूना अपनी-अपनी कलमें उतना न पहचानते हों। कूना बोलू से कलम लेना चाहती थी।

छुआछुआइल का खेल लड़के खेल रहे थे। कूना भी थी। बोलू चुपचाप अखाड़े की रेत पर जाकर खड़ा हो गया था। और कहीं खो गया था। भैरा

तेज़ भाग नहीं पाता था। दाम कूना को देना था। वह जानती थी कि वह भैरा को छू लेगी। वह भैरा को छूने को थी कि भैरा कूना से बचकर भागते हुए बोलू की तरफ भागा। रेत पर भागते हुए वह लड़खड़ा गया और भारी-भरकम भैरा बोलू से जाकर ज़ोर से टकरा गया। टकराकर भैरा छिटककर रेत पर गिरा। बोलू तब भी खोया हुआ था। टस से मस भी नहीं हुआ। वह चुपचाप उसी तरह खड़ा था। भैरा को रेत पर गिरने से उतनी चोट नहीं आई थी जितनी चोट बोलू से टकरा जाने से आई थी। कूना और दूसरे लड़कों ने गिरे-पड़े भैरा को उठाया। भैरा रो रहा था। बोलू मौलश्री के घने पेड़ पर बैठे किसी पक्षी की मीठी बोली सुन रहा था। वह खो गया था। पक्षी दिखाई नहीं दे रहा था।

भैरा रोते-रोते बोल रहा था कि बोलू ने जानबूझकर उसे गिराया है। कूना और सब लड़कों ने भैरा से कहा कि वह झूठ बोल रहा है। भैरा बोलू से टकराकर गिरा है। गलती भैरा की है।

"चोट मुझको लगी है। बोलू को तो नहीं लगी है।" भैरा ने फिर रोते हुए कहा।

"चुपकर रोना। रोएगा तो मारूँगी। चल दाम दे।" कूना ने हाथ उठाकर कहा। "फिर से खेल होगा।" भैरा ने कहा। वह चुप हो गया था। भैरा रोनटाई खेल रहा था। वह दाम नहीं देना चाहता था। भदभद दौड़कर वह किसी को छू नहीं सकता था। और कूना जानती थी कि वह भैरा को हर बार दौड़कर पकड़ सकती है। "चलो।" कूना ने कहा। वह फिर से दाम देने को तैयार थी।

भैरा को छोड़ सब बोलू के पास गए। पक्षी उड़ गया था। "तुमको चोट तो नहीं लगी।" कूना ने बोलू से पूछा। "नहीं। भैरा कैसे गिर गया था?" बोलू भैरा के पास गया।

"तुमको मेरे टकराने से कुछ नहीं हुआ?" कराहते हुए भैरा ने पूछा। "नहीं।" बोलू ने कहा। "बोलू तू कुश्ती लड़ेगा?" बोलू का हाथ पकड़कर भैरा ने कहा। "नहीं। कुश्ती लड़ना मुझको नहीं आता।" भैरा से दूर जाकर बोलू ने कहा। डर गया। "नहीं।" बोलू फिर एक कदम पीछे हटा। "मैं भी तुमको गिराऊँगा।" भैरा ने कहा। बोलू का ध्यान एक रंग-बिरंगे कीड़े पर था। उसकी पीठ पर सुनहरी और बैंगनी धारियाँ बनी थीं। बोलू फिर से कहीं खो गया था। बोलू चुपचाप था। तभी भैरा ने झपटकर दोनों हाथों से कसकर बोलू को पकड़ा और पैर से अड़ंगा लगाकर गिराने लगा। बोलू के पैर अंगद की तरह रेत पर गड़े थे। भैरा उसे हिला भी नहीं सका। बोलू का ध्यान तब भी कीड़े पर था। पर कीड़ा शायद भैरा के

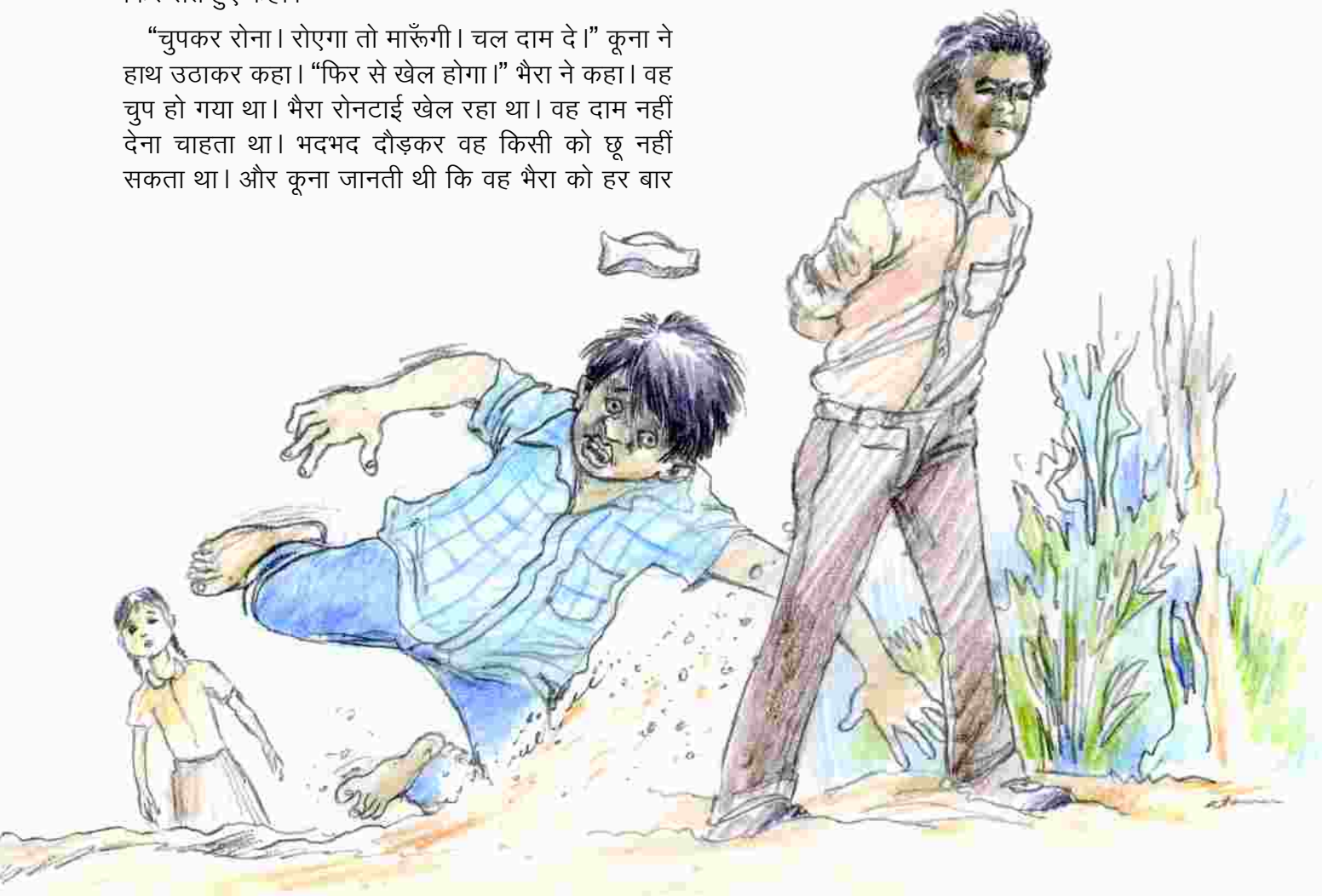

कारण चौंक गया था। वह तेज़ी से एक पत्थर की तरफ भागने लगा था। कूना रोने लगी थी। वह डर गई थी। दूसरे लड़के भी डर गए थे। यह सब की आशा के विपरीत हुआ था। कीड़े की भी आशा के विपरीत।

भैरा बोलू को छोड़कर अलग हो गया। और दूर जाकर खड़ा हो गया। भैरा ने सोचा वह दौड़ता हुआ बोलू को ज़ोर से धक्का देगा। उसे विश्वास नहीं हुआ था कि वह बोलू से टकराकर गिर पड़ा था। कूना बोलू के पास जाकर खड़ी हो गई थी। भैरा बोलू से कुछ दूर और चला गया। वह जंगली भैंस के पड़वे की तरह बोलू की ओर फदर-फदर दौड़ा। वह पसीने से भीगा हुआ था। उसके माथे और गले में रेत चिपकी थी। कूना को समझ में नहीं आया कि भैरा दौड़ा क्यों आ रहा है। "कूना हट जा।" दौड़ते हुए भैरा चिल्लाया। कूना नहीं हटी। "कूना दूर हो जा।" भैरा के टकराने के पहले बोलू ने कहा और कूना के सामने आकर चुपचाप खड़ा हो गया। दौड़ते-दौड़ते भैरा बोलू से टकराया और उसे ज़ोर-से धक्का दिया। भैरा से टकराने के पहले बोलू को सुनहरी और बैंगनी पट्टी वाला कीड़ा दिख गया था। बोलू ने देखा कि कीड़े की सुनहरी पट्टी चमक रही थी। और उसी समय बोलू कहीं खो गया था।

भैरा बोलू से छिटककर रेत से बाहर जा गिरा था। वह ज़ोर से रो रहा था। उसे चोट लगी थी। पर भैरा के टकराने के बाद भी बोलू जस का तस खड़ा था। कीड़ा दिख नहीं रहा था।

बोलू ने भैरा के पास जाकर पूछा, "क्यों रो रहे हो भैरा, तुमको क्या हुआ?" "जैसे तुमको मालूम नहीं!" रोते-रोते भैरा ने कहा। "सच में मुझे कुछ नहीं मालूम।" भैरा को चुप कराते हुए बोलू ने कहा। भैरा की गलती को सबने भुला दिया था। सब भैरा को चुप करा रहे थे। भैरा को अपनी गलती मालूम हो गई थी। रोना बन्दकर वह हँसने लगा था, "तुमको चोट तो नहीं लगी?" चोट से कराहते हुए भैरा ने बोलू से पूछा। नहीं बोलू ने कहा। "चलो घर चलें। मुझको उठाओ।" भैरा ने कहा। सबने ज़ोर लगाकर भैरा को उठने में सहायता की। "छुट्टी का दिन तो अभी बहुत बाकी है।" कूना ने भैरा के कपड़ों में लगी रेत को झरियाते हुए कहा। भैरा की आँखों में अभी भी आँसू थे। सब बस्ती की तरफ चल पड़े।

कुछ दूर चले ही थे कि किसी को बोलू की आवाज़ सुनाई नहीं दी। बिना बोले या गुनगुनाते हुए बोलू साथ नहीं हो सकता था। "अरे बोलू!" भैरा ने मुड़कर कहा। सब मुड़े। बोलू अखाड़े की रेत पर खड़ा था और शायद कहीं खो गया था। "चलो बोलू।" सबने पुकारा। बोलू ने सुना नहीं। तभी अखाड़े में शायद व्यायाम के लिए आया एक युवक कूना के पास से निकला। "भय्या बोलू चुपचाप है। चल नहीं पा रहा है। कुछ बोलता नहीं। इसी तरह चुपचाप खड़ा रहेगा तो घर नहीं जा पाएगा।" युवक बस्ती में नया था। बोलू को नहीं जानता था। एक-दो दिन पहले भटककर बस्ती आया था। "बालक को घर पहुँचाना है। मैं पहुँचा दूँगा। साथ चलकर घर बता देना। कल रात को ही यहाँ आया हूँ।" युवक ने कहा। भटककर आया यह भी वह कहना चाहता था। पर यह कहना उसे अनावश्यक लगा।

सब खुश हो गए थे। बोलू पत्थर की तरह खड़ा था। वह नहीं हिल रहा था। उसके बड़े-बड़े बाल हवा में हिल रहे थे। युवक बलिष्ठ और शिष्ट था। उसका पैर व्यायाम के लिए रखे पत्थर से टकराया। उसने दोनों हाथों से पत्थर को सिर से ऊपर उठाकर किनारे फेंक दिया जैसे फुटबाल को उठाकर फेंकते हैं। सब देख रहे थे कि जिस तरह उसने पत्थर को फुटबाल की तरह फेंका था तो पत्थर भी धप्प, धप्प फुटबाल की तरह उछलता हुआ दूर जा गिरा था।

"क्या गुस्सा हो? भूख लगी है? घर चलो।" कहकर उसने बोलू को उठाया। उसने बोलू को उसी तरह उठाने की कोशिश की जैसे सम्हालकर किसी बच्चे को उठाते हैं। और वह चकित हुआ कि बोलू हिला नहीं। उसने थोड़ी ताकत लगाई फिर भी बोलू हिला नहीं। अब सभी लड़के दोनों को घेरे हुए थे। कूना भी थी। अब उसने साँस खींचकर और बल लगाया। फिर पूरा बल लगाया। बोलू के पैर थोड़ा भी नहीं हिले। बोलू रेत पर खड़ा था। पर युवक को भ्रम हुआ कि बोलू के पैर रेत में धँस गए हैं। चकमक

जारी...